शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी : व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ.मुक्ता यादव
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी साहित्य लेखन की विभिन्न विधाओं में आलोचना साहित्य का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। आलोचना एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति है। यह एक साहित्यिक हथियार है जो साहित्य को उन्नत बनाने में सहायक है। हिन्दी साहित्य का आलोचनाशास्त्र जटिल विषयों रस, औचित्य, अंलकार, ध्वनि साधारणीकरण जैसे विभिन्न विषयों पर चिंतन करने के लिए विद्वानों को प्रेरित करता है। यही चिंतन शास्त्रीय आलोचना को जन्म देता है। भारतीय हिन्दी आलोचना साहित्य में आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी अद्भुत लेखन कला से हिन्दी की शास्त्रीय आलोचना में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। उन्होंने साहित्य के विभिन्न पहलूओं और प्रवृत्तियों आदि को अपनी लेखनी के माध्यम से हिन्दी के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनका व्यक्तित्व एंव लेखन बड़ा ही विलक्षण ढंग का है। प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

पृष्ठभूमि एंव परिस्थितियाँ : साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्यकार इस साहित्य रूपी दर्पण में प्रत्येक युग की राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक पृष्ठभूमि को व्याख्यातित करता है और इसके साथ ही वह अनुभूतियों को जीता भी है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और प्रत्येक युग में समाज व मनुष्य के जीवन में परिवर्तन होते रहते है और यह परिवर्तन ही जीवन मूल्यों के विकास का आधार होते हैं। हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकार प्रेमचंद ने भी साहित्य रचना में व्यक्तिगत अनुभूतियों की उपादेयता को स्वीकार किया है। उनके अनुसार "साहित्यकार के अन्तर में विद्यमान पीड़ाजन्य अनुभूतियाँ स्वंय ही उससे साहित्य - रचना करा लेती हैं। प्रेमचंद यह भी कहते हैं कि साहित्यकार के कंधों पर दोहरा दायित्व होता है, एक तो सामाजिक जन चेतना को बिम्बित कर मानवीय भावनाओं को परिष्कृत संस्कारित करना, दूसरे परिवेश से निर्मित मूल्यों के संत्रास को उद्घाटित करना। समाज और परिवेश में व्याप्त कोई विचारधारा जब समूचे जनमानस को और विचलित करती है, तो सबसे ज्यादा प्रभावित साहित्यकार होता है। उसकी विशाल आत्मा देश के बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और तीव्र विफलता में वह रो उठता है। उसके रूदन में व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर ही सार्वभौमिक होता है। आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का सम्पूर्ण साहित्य युगीन संवेदना का सामाजिक दस्तावेज है।

व्यक्तित्व

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार और परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्ति से ही परिवार नही जाना जाता

परिवार से व्यक्ति भी पहचाना जाता है। यही तथ्य परिवेश के संदर्भ में भी सत्य है, जिसमें जन्मस्थली से लेकर कर्मस्थली तक को समेटा जा सकता है। आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का जन्म वाराणसी की चकिया तहसील के नीवींकला गाँव में 4 जनवरी को हुआ। उनके पिता का नाम पंडित आदित्यनाथ और माता का नाम राजकुमारी देवी था। त्रिपाठी जी के परिवार का मुख्य कार्य पौरोहित्य था। त्रिपाठी जी बचपन से ही, धर्मपरायण तथा भारतीयता में जीने के कारण भारतीय संस्कृति के गतिमान उपासक बने। इनके पितामहा ज्योतिष शास्त्रस्त्र के अध्येयता थे। अल्पायु में ही इनके पिता का स्वर्गवास हो गया जिस कारण इनका लालन-पालन पितामह के सन्निध्य में हुआ। त्रिपाठी जी का जीवन संवारने में उनके आचार्य गोपीनाथ का योगदान रहा। पं. आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी को पहले राममूरत तिवारी के नाम से जाना जाता था। उन्हें 'मूरत' से 'मूर्ति' बनने में बहुत 'गढा़ ई सहनी पडी।

शिक्षा-दीक्षा

त्रिपाठी जी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव इमदीद पाठशाला से शुरू हुई। दूसरी कक्षा उतीर्ण करने के बाद दो मील दूर सिकपुर नामक कस्बे में एक प्रायमरी स्कूल से तीसरी, चौथी कक्षा उतीर्ण की। 1938-39 में चकिया से पांचवी कक्षा उतीर्ण की। जम्मू छात्रावास रहते हुए 1941-42 में मिडिल कक्षा उतीर्ण कर एक साथ सभी विषयों में 'एडमिशन' (हाईस्कूल) और साहित्य तथा व्याकरण से मध्यमा की परीक्षा दी और दोनों में उतीर्ण हुए। सन् 1945 में बी. ए. किया। 1956 में एम. ए. हिन्दी की परीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उतीर्ण की, जिसमें उन्होंने अपना प्रबंध 'व्यंजना और नवीन कविता' विषय पर प्रस्तुत किया। शोधोपाधि के अंतर्गत सन् 1959 में राम अवध द्विवेदी के निर्देशन में 'लक्षणा और उसका प्रसार' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1972 में 'आगमों के आलोक में हिन्दी निर्गुण साहित्य की नई व्याख्या' विषय पर डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की।

अध्यापन कार्य

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में सन् 1954 से 1960 तक संस्कृत प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रहे। उसके बाद सागर में अपनी सेवायें दीं। सन 1966 से 1989 में सेवानिवृत्ति तक विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में कार्यरत रहे। केंद्रीय हिंदी निदेशालय भारत सरकार ने उन्हें आचार्य की पदवी से विभूषित किया। देश के अनेक विश्वविद्यालयों में आपने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी विलक्षण व्यक्तित्व के धनी, सच्चे मानव, संघर्षषील, अतंर्मुखी, गंभीर, सहनशील, अनुसंधित्सु, धर्मपरायण, सेवाभावी, प्रखर वक्ता, आत्मीय, सादगी, समीक्षक व्यक्तित्व साहित्यिक दृष्टि रखने वाले थे। डॉ. त्रिपाठी जी धोती कुरते की वेषभूषा में विशुद्ध भारतीय पांडित्य को मेघा से भी सार्थक करते हैं। उनकी विद्वता उनका स्वभाव बन गयी। सरलता उनकी प्रकृति है। उनकी मेधा शक्ति को अनेक बार सम्मानित और पुरस्कृत होने का गौरव हासिल हुआ। उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान ने उन्हें वर्ष 2009 में 'भारत भारती' सम्मान प्रदान किया। आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का 30 मार्च 2009 को निधन हुआ।

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी की शास्त्रीय आलोचनात्मक कृतियाँ

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ये मूलतः शास्त्रीय परम्परा के आलोचक है। इन्होंने सैद्धातिक कथनों के विवेचन विश्लेषण और पुनर्स्थापना का जितना श्रमपूर्वक प्रयास किया है, उतना गहन अनुशीलन आज दुर्लभ होता जा रहा है। संस्कृत परम्परा के विद्वान होने के साथ समकालीन भारतीय काव्यशास्त्रीय चिन्तन के पंडित जी एक मान्य हस्ताक्षर थे। उन्होंने निष्ठा और ईमानदारी के साथ भारतीय काव्यशास्त्र के प्राणतत्वों का अनुशीलन किया है। उसी के साथ आधुनिक नूतन आलोचकीय मानकों को भी परखा है। उनका अद्वितीय साहित्य भण्डार इस बात का प्रमाण है कि साहित्यशास्त्र के ही नये पुराने पक्षों को उन्होंने नहीं उठाया अपितु काव्यशास्त्र के क्षितिज को भी उजागर किया है। प्राचीन एंव पाश्चात्य दोनों ही आलोचना संसार का उन्होंने गहन चिंतन किया है। उनकी आलोचनात्मक कृतियाँ इस बात का पुख्ता प्रमाण है।

शास्त्रीय आलोचनात्मक कृतियाँ

क. व्यंजना और नवीन कविता : त्रिपाठी जी की सर्वप्रथम आलोचनात्मक कृति व्यंजना एवं नवीन कविता है जो एम. ए.परीक्षा के अष्टम प्रश्नपत्र के विकल्प के रूप में प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध मुद्रित रूप है। इस कृति के दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड सैद्धांतिक पक्ष एवं द्वितीय खण्ड व्यावहारिक पक्ष पर है। सैद्धांतिक भाग में वस्तुतः अधोलिखित सभी शक्तियों की चर्चा की गई है।

1 अभिधा 2 लक्षणा 3 व्यंजना 4 तात्पर्य 5 रसना 6 भावना 7 भोग। कुल मिलाकर ग्रंथ के पूर्वार्द्ध का मुकुरमय शास्त्रीय कलेवर हिन्दी की नवीन कविता की आत्मा को प्रतिबिम्बत करने में पूर्ण सामर्थ्य से युक्त है।

साहित्य शास्त्र के प्रमुख पक्ष : यह कृति भारतीय साहित्य दर्शन एवम् साहित्यशास्त्र के प्रमुख पक्षों को उद्घाटित करती है। यह ऐतिहासिक एवम् तुलनात्मक पीठिका पर आधारित है। साहित्य शास्त्र के प्रमुख पक्षों पर समादृत करने वाली यह पुस्तक नय-पुराने समस्त चिन्ताओं-विचारों के मतों को तो स्वीकार करती ही है। साथ ही विल्कुल खुले दृष्टिकोण से विभिन्न स्रोतों की साहित्यिक उपादेयता को भी सविनय स्वीकारती है और तार्किक ढंग से अपने मत की पुष्टि के लिए उनका खण्डन करती है। कृति के सन्दर्भ में आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी जी का अभिमत है कि "समस्त निबन्धों में आधुनिक पाठक के लिए आधुनिक शैली में विचार प्रस्तुत किये गए हैं। निबंधात्मक शैली में लिखित प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन भारतीय काव्य शास्त्रीय मतवादों से लेकर आधुनिक प्रतिमानों तक का परिचय एवं विश्लेषण किया गया है।

ख शरतीय साहित्य दर्शन : शास्त्रीय विवेचन के क्षेत्र में यह उनकी अद्वितीय पुस्तक है। इस पुस्तक में ऐसी अनुपम बातें है जो काव्यशास्त्र के क्षेत्र में पहली बार आई। त्रिपाठी जी ने इस पुस्तक के माध्यम से शरत की समन्वयी प्रकृति का परिचय दिया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ शास्त्रीय शरतीय परम्परा का मन्थन कर प्रमाणिक रूप में निष्पन्न है।

ग. लक्षणा और उनका हिन्दी काव्य में प्रसार : राममूर्ति त्रिपाठी का प्रस्तुत ग्रंथ लक्षणा और उनका हिन्दी काव्य में प्रसार अनेक दृष्टियों से विशेष महत्व रखता है। लक्षणा-शक्ति संबध निरूपण और विचार की सामग्री संस्कृत ग्रन्थों में प्रभूत रूप में वर्तमान है। लक्षणा शक्ति पर किया गया यह शोधपूर्ण कार्य शरतीय परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। लक्षणा शक्ति का वर्णन जिस रूप में इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है वैसा हिन्दी तो क्या संस्कृत साहित्य में

भी किसी ने प्रस्तुत नहीं किया है। कुल सात अध्यायों में विभक्त यह कृति लक्षणा शब्दशक्ति से सम्बन्ध रखती है। शोध के स्तर पर इतना वृहद और विद्वतापूर्ण कार्य सराहनीय है आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने तो इस कृति के बारे में पुरोवचन में यहाँ तक कहा है कि इतना विस्तृत विचार लक्षणा के संबंध में इसके पूर्व कहीं देखा तो क्या सुना भी नही गया यह कार्य अनुसंधानपरक है।

घ. रस सिद्धांत नये सन्दर्भ : रस सिद्धांत: नये सन्दर्भ आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी द्वारा सम्पादित एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें रस सम्बन्धी लेखों को बडी ही निष्ठा के साथ प्रस्तुत किया गया है। त्रिपाठी जी के इस कृतित्व से पता चलता है कि निःसंदेह आचार्य बाजपेयी से अच्छा नया चिन्तक और कोई नहीं है जिसने पारस्परिक शास्त्र चर्चा को युगीन मानदण्डों के अनुरूप नई दिशा दी।

(5) **औचित्य-विमर्श :** आचार्य राममूर्ति ने अपनी इस कृति औचित्य विमर्श में क्षेमेन्द्र की प्रसिद्ध रचना 'औचित्यविचार चर्चा न केवल सानुवाद प्रस्तुत की है अपितु पूर्व एंव पश्चिम में औचित्य के समग्र विकास का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है। इस तरह डॉ. त्रिपाठी की यह कृति औचित्य परम्परा के समग्र रूप से विश्लेषित रूप में जानने का सशक्त और महत्वपूर्ण साधन है।

(6) **रस विमर्श** : इस पुस्तक में त्रिपाठी जी ने ऐतिहासिक पद्धति को अपनाया है और भरततमुनि से लेकर आज तक के इससे सम्बन्धी चिन्तन को विवेचनापूर्वक उपस्थित किया है। त्रिपाठी जी की दृष्टि यद्यपि रस सम्बन्धी शास्त्रीय विचारणा को ही केन्द्र में रखकर चली है। उनका यह ग्रंथ आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना की ढाई दशक पहले अपने प्रकाशन के समय था।

(7) **शरतीय काव्य समीक्षा में ध्वनि सिद्धांत :** आचार्य त्रिपाठी ने काव्यशास्त्रपरक ग्रन्थों में कई सार्थक उपस्थापनाएँ की हैं। उनका अपना महत्व अक्षुण्ण है। किन्तु उक्त ग्रन्थ की भूमिका कुछ और ही प्रकार से मण्डित है। काव्य मात्र की व्याख्या के लिए जिस 'ध्वनि सिद्धांत' का बीज-वपन आनंदवर्धन द्वारा हुआ उस वृक्ष का पल्लवन हमें आचार्य त्रिपाठी में दिखाई देता है। इस दृष्टि से आचार्य त्रिपाठी ध्वनि सिद्धान्तीय परम्परा के एक प्रस्थानक आचार्य हैं।

(8) **शरतीय काव्य समीक्षा में अलंकार सिद्धांत :** यह कृति पांच अध्यायों में विभक्त है। आलोच्य कृति डॉ. त्रिपाठी द्वारा सम्पादित एक अन्यतम कृति है। इसमें अलंकार सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए अलंकार के उत्स, स्वरूप, विकास और वर्गीकरण पर गहन विचार किया गया है।

(9) **शरतीय काव्य समीक्षा में औचित्य सिद्धांत की भूमिका :** आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने 'भारतीय काव्य समीक्षा में औचित्य सिद्धांत की भूमिका ग्रंथ में पतलिका शीर्षक से एक लम्बी भूमिका लिखी है। इस पतलिका की रचना में डॉ. त्रिपाठी ने जो लक्ष्य रखा है, वह मूल-ग्रंथ में समालोचित विषय औचित्य की आलोचना है। अतः औचित्य विचार के तीन बिन्दु है। (1) सर्जन (2) ग्रहण (3) समीक्षण को कार्य से सम्बद्ध बताया है और औचित्य का सम्बन्ध कार्यमात्र से विचार को विस्तार दिया है।

(10) **आगमों के आलोक में भारतीय काव्यशास्त्र** : आलोच्य ग्रंथ में सर्वप्रथम आगम का स्वतंत्र तंत्र ग्रन्थों के आधार पर स्पष्ट किया गया है। ये ग्रंथ हैं - स्वच्छन्द तंत्र, स्वच्छन्दोघोत , ईश्वर प्रत्यभिज्ञा, विवृत्ति विमर्षिनीतथातन्त्रालोक आदि।

यह ग्रन्थ आचार्य त्रिपाठी के द्वारा दिए गए व्याख्यानों का एक लेखन संकलन है। इसमें मुख्य बिंदु है - काव्य का स्वरूप, काव्य का प्रयोजन, हेतु, रचना प्रक्रिया, सहृदय का स्वरूप, इसका साधरणीकरण, चमत्कार, ध्वनि, वक्रोक्ति। इस प्रकार प्रस्तुत आलोच्य कृति आगमी चिन्तन के आलोक में साहित्यशास्त्र के अनेक बिन्दुओं का स्पष्टीकरण देती है।

(11) **काव्य तत्व-विमर्श** : काव्य तत्व विमर्श उनका अप्रतिम ग्रंथ है। भारतीय काव्य-चिन्तन पर इतनी समग्रांग व्यवस्थित तथा प्रामाणिक कदाचित ही इस क्षेत्र में कोई दूसरी कृति हो। काव्य का स्वरूप, उनके हेतु, प्रयोजन, रचना प्रक्रिया, आस्वादयिता सहदय का वास्तविक स्वरूप-विमर्श भाषा, बन्ध, इन्द्रिय -माध्यम, शैली तथा अर्थगत चमत्कार के आधार पर निरूपित काव्य के भेद-प्रभेद का सविस्तार विवेचन नायक नायिका भेद और शब्द शक्तियों का तलस्पर्शी व्यवस्थापन प्रथम खण्ड में किया गया है।

(12) **अर्द्धशती का काव्यचितंन पक्ष और विपक्ष** : आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी की पुस्तक आलोचना के समूचे परिदृश्य के पुनराख्यान की मांग ही नहीं करती उसके लिए विवश करती भी प्रतीत होती है। प्रस्तुत ग्रंथ में रस सिद्धांत और ध्वनि-सिद्धांत की प्रांसगिकता सदैव रही है का उल्लेख है। प्रस्तुत कृति की स्थापनाएँ मूलतः काव्यास्वादन से जुड़ी हैं और एक ओर यह दिखलाती है कि काव्यशास्त्र के अन्य विरोधी उसे
समझने का सामर्थ्य ही नहीं रखते अपितु वे उसकी व्याख्या पर बल देते हैं। इसका मूल प्रतिपाद्य इसके सिद्धांतखण्ड़ के पन्द्रह निबन्धों में समाहित है।

(13) **कामायनी : कला और दर्शन :** आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने 'कामायनी: कला और दर्शन' में उनकी साहित्य मर्मज्ञता और सूक्ष्म अंतरदृष्टि का परिचय स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होता है। 'कामायनी कला और दर्शन' दोनों पक्षों की मीमांसा करते हुए आपने ठोस निष्कर्ष निकाले हैं। इन निष्कर्षो में वैज्ञानिक सन्तुलन और गुरूता है। निःसंदेह 'कामायनीः कला और दर्शन' ग्रन्थ प्रसाद साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन को पुष्ट और समृद्ध करता है।

अनुवाद : काव्यशास्त्र तथा तन्त्रागम के पारस्परिक अवबोध को युगानुरूप व्याख्या और अनुचिन्तन प्रदान करने वाले समकालीन विद्वानों में डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी अन्यतम है। आधुनिक हिन्दी - आलोचना को संस्कृत का गाम्भीर्य और औदात्य देकर सुप्रतिष्ठित करने वाले उपचार्यो में आचार्य त्रिपाठी का विश्रुत स्थान है। काव्यशास्त्रीय अनुशासन और तन्त्र को लेकर आपकी अनेक कृतियाँ अध्येताओं में चर्चित एवं प्रथित हुई है। परंतु आपके लेखन के केवल यही दो आयाम नहीं हैं, इसमें मौलिक एवं शोध-परक कृतियाँ भी हैं और बहुत्सा अनुदित वाड्मय भी है।

1. **प्रणवभारती** : पं.ओंकारनाथ ठाकुर के अनुरोध पर प्रणवभारती का अनुवाद किया गया यद्यपि यह ग्रंथ अप्राप्त है।

2. **बौद्ध-संग्रह** : बौद्ध संग्रह में बुद्धावदान, श्रावययान धर्म, श्रावयक, यानिक महायान, महायान दर्शन जातक कथाएं (हीनयान) प्रत्येक यान, सम्यक्, सम्बुद्धि, वज्रयान (मन्त्रयान) आदि दार्शनिक, धार्मिक विषयों का परिश्रमपूर्वक विवेचन किया गया है, जो शब्दानुवाद से दो कदम आगे है। शाक्ताद्वैत आगम की प्रसिद्ध पुस्तक 'कामकलाविलास' का विस्तृत भाष्य भी डा. त्रिपाठी की एक महत्वपूर्ण अनुवाद रचना है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

3. **नृसिहंचम्पू** : साहित्यिक अनुवादों के अतंर्गत 'नृसिंहचम्पू' का विस्तृत अनुवाद है। ये चौखम्बा भवन वाराणसी द्वारा 1959 में प्रकाशित हुआ। इसमें यथास्थान छंद और अलंकारों का सुलक्षण सुबोध निर्देश भी उपलब्ध किया गया है।

औचित्य चर्चा : औचित्य चर्चा का रूपान्तर तथा लगभग 150 पृष्ठों की भूमिका एक दूसरा विशेष कार्य है। जिसमें इस सिद्धांत की पाश्चात्य और भारतीय पद्धति तथा अन्य वादों के साथ तुलना की गई है। इसके अलावा त्रिपाठी जी ने मम्मट कृत प्रसिद्ध लक्षण ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' का हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

जैन प्रस्थान : कतिपय विचार बिन्दु, गुरूमाहात्मय, स्वामी नारायण सम्प्रदाय की दार्शनिक भूमिका, मुनि विद्यासागर के प्रबंध 'मूकमाटी' पर लिखे गए समीक्षा परक ग्रन्थ का कई खण्ड़ों में सम्पादन किया है।

अन्य रचनाएँ : त्रिपाठी जी ने काव्यशास्त्रीय ग्रथों के अलावा भी अन्य ग्रंथ लिखे।

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ.. राममूर्ति त्रिपाठी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को वस्तुपरक , प्रमाणिक , प्रभावशाली मध्यमार्गी रूप में अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है।

2. आगम और तुलसी : इस पुस्तक में आगमिक चिन्तन के आलोक में तुलसी का मूल्यांकन किया गया है। प्रस्तुत कृति में गोस्वामी जी की काव्यचेतना और रचना से संबंधित विषयों पर विचार हुआ है। इसमें तुलसी के काव्य का वर्तमान संदर्भो में आकलन मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

3. सूर-विमर्श : सूर विमर्श में सूर साहित्य का पारम्परिक चिंतन के आलोक में मूल्यांकन किया गया है।

इसके अलावा उन्होंने प्रेमचन्द का चिंतनः अपनी जमीन साहित्यकार और चिन्तक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी , आलोचक आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी , कबीर वचनामृत, आलम ग्रन्थावली, सूर पद मालिका, तंत्र और संत गुरू महिमा नामक कृतियाँ भी रची हैं।

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी जी की पहचान उनकी रचनात्मक क्षमता और क्रियात्मक गतिविधियों के लिए राष्ट्रव्यापी स्तर पर कर जाती है। अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी अप्रतिहत गति रही है। भारतीय आचार्य परम्परा केब प्रख्यात आधुनिक मनीषियों में उनका स्थान अग्रणी है। हिन्दी साहित्य को अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने जो प्रदान किया है वह हिन्दी से जुड़े व्यक्तियों के लिए अमूल्य धरोहर के स्वरूप है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *डॉ. विश्वनाथ शुक्ल, अक्षत, पृष्ठ35*
- *डॉ.भगवत देव पाण्डे - अक्षत, पृष्ठ 60*
- *डॉ.भगवतीलाल राजपुरोहित, विश्वेश्वर से महाकालेश्वर, पृष्ठ 130- 139*
- *डॉ.भगवान देव पाण्ड़े, पृष्ठ 61*
- *डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, अक्षत, पृष्ठ 33*
- *प्रो. प्रेमशंकर रघुवंशी अक्षत, पृष्ठ 36*
- *रामनारायण उपाध्याय, विश्वेश्वर से महाकालेश्वर, पृष्ठ 59*
- *डॉ.मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, अक्षत पत्रिका, पृष्ठ 52*
- *डॉ.मनोज कुमार पाण्डेय, अक्षत पत्रिका, पृष्ठ 62*
- *डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत, बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक, पृष्ठ 190*
- *डॉ.विश्वनाथ शुक्ल, अक्षत, पृष्ठ 35*
- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी - व्यंजना एंव नवीन कविता, नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी 1956*
- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी, रस विमर्श, विद्या मंदिर वाराणसी, 1964*

- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी लक्षणा, नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी,*
- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी काव्य तत्व विमर्श, कोव्यर्क प्रकाशन 1966*
- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी कामायनी कला दर्शन, राका प्रकाशन, इलाहबाद 1963*
- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी- रहस्यवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1966*
- *डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी - औचित्य विमर्श, भारतीय भण्डार इलाहबाद 1985*
- *डॉ.श्रीराम परिहार - अक्षत आचार्य राममूर्ति मुद्रक एम एण्ड एस 2003*
- *त्रिपाठी पर एकाग्र, ग्राफिक्स रामगंज, खण्डवा*
- *डॉ.विद्यानिवास मिश्र - विश्वेश्वर से महाकालेश्वर आचार्य,राका प्रकाशन 1994*
- *राममूर्ति त्रिपाठी व्यक्तिव एंव कृतित्व इलाहबाद*
- *त्रिपाठी राममूर्ति - साहित्य के प्रमुख पक्ष, वाणी वितान प्रकाशन वाराणसी 1966*
- *रस सिद्धात नए सन्दर्भ - पृष्ठ 1, 5*